आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2281 • उदयपुर, शुक्रवार 2 अप्रेल, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

सेवा–जगत्
मन से सेवा, नारायण सेवा

टेक्नालॉजी के दम पर अब हम डिजाइनर वैक्सीन के युग में

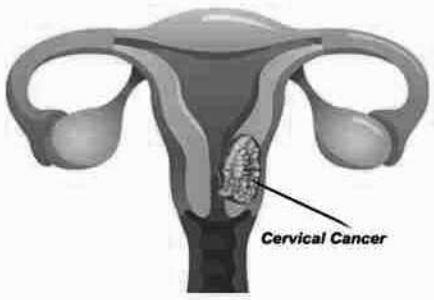

वैक्सीन के विकास का इतिहास उतार–चढ़ाव भरा रहा हैं। सर्वाइकल कैंसर के लिए वैक्सीन विकसित करने में विश्व को 26 वर्ष और रोटावायरस के लिए 25 वर्ष लग गए। इसके अलावा पिछले 40 सालों में एड्स से 3.5 करोड़ लोगों की मृत्यु हो चुकी है। वर्ष 1987 से 30 वैक्सीन का मानव पर क्लिनिकल ट्रायल किया जा चुका है, लेकिन एड्स के लिए कोई वैक्सीन अभी तक तीसरे चरण में पास नहीं हुई। विश्व भर में एड्स की वैक्सीन विकसित करने पर सालाना करीब 3500 करोड़ रुपए से ज्यादा खर्च किए जाते है।

मलेरिया में हर साल 40 करोड़ लोग पीड़ित होते हैं, जिनमें से लगभग 20 लाख की मौत हो जाती है। इसकी वैक्सीन बनाने के लिए अनुसंधान पर सालाना 700 करोड़ से अधिक रुपए खर्च किए जाते है, लेकिन अभी तक वैक्सीन बन नहीं पाई। इसी प्रकार सार्स और मर्स के लिए भी कोई वैक्सीन उपलब्ध नही है। फिर ऐसा कैसे संभव हुआ कि कोविड–19 वायरस का पता लगाने के मात्र 100 दिन में ही 45 वैक्सीन विकसित होने की प्रक्रिया में आ गई ? ऐसे कैसे संभव हुआ कि मात्र 63 दिन में आरएन विधि से वैक्सीन(मार्डना) बना कर एक मनुष्य को लगा भी दी गई ? कोविड–19 वायरस सामने आने के मात्र 11 माह के भीतर दिसम्बर 2020 में फाइजर और बायोएनटेक की एमआरएनए की एमआरएनए वैक्सीन को मंजूरी मिल गई।

आज 321 कोरोना वैक्सीन कैंडिडेट विकास के विभिन्न चरणों में है। इनमें से 42 कैंडिडेट का मनुष्यों पर क्लिनिकल ट्रायल चल रहा है और 9 वैक्सीन को कोरोना टीकाकरण के लिए अधिकृत कर दिया गया है।

इतिहास साक्षी है कि पहले चरण के क्लिनिकल ट्रायल में करीब 90 प्रतिशत वैक्सीन अंतिम चरण तक पहुंच ही नहीं पाती और 25 प्रतिशत वैक्सीन तीसरे चरण में विफल साबित होती है। वैक्सीन निर्माता कंपनी एक कैंडिडेट पर 10 हजार रुपए के अधिक का निवेश करती है। जहां तक दवाओं का सवाल है, एक दवा को बाजार तक लाने की औसत लागत 20 हजार करोड़ रुपए होती है। इसमें पहले चरण के बाद सफलता दर मात्र 10 प्रतिशत हैं। आम तौर पर नियामकीय मंजूरी मिलने में एक से दो साल का समय लगता है।

हर चरण के बाद नियामक को जानकारी देना जरूरी है। महामारी के चलते नियामकों ने कुछ मामलों में पहले व दूसरे चरण के ट्रायल को संयुक्त करने की अनुमति दे दी। कोरोना की असाधारण समस्याओं के संदर्भ में कुछ नियामक (जैसे कि यूके) 'रोलिंग रिव्यू' मंजूरी पद्धति अपना रहे हैं। इसके तहत जैसे–जैसे डेटा सामने आता है उनका अध्ययन और परीक्षण साथ–साथ चलता रहता है, बजाय सारा डेटा एक साथ जुटा एक साथ समीक्षा करने के।

अनुकूल हो ट्रायल पद्धति– क्लिनिकल ट्रायल के लिए तकनीक विकसित करने और प्रोटोकॉल तय करने की जरूरत है। क्लिनिकल ट्रायल की मौजूदा परिपाटी 1946 से ज्यों की त्यों है, जब यूके में स्ट्रेप्टोमाइसिन का ट्रायल किया गया था। हमें 'अनुकूल ट्रायल' पद्धति अपनानी चाहिए, ताकि परिणामों के अनुसार ट्रायल की परिकल्पना करनी होगी, जिसमें नई कम्प्यूटरीकृत तकनीक का समावेश किया जा सके। हम इस समस्या से कैसे निजात पा सकते है कि 95 प्रतिशत असरदार वैक्सीन मात्र 42 दिन में तैयार हो जाए, लेकिन मंजूरी में ही दस माह और लग जाएं जबकि इस दौरान लाखों जाने जा सकती है ?

एमआरएनए तकनीक से जल्दी बनती है वैक्सीन– फाइजर और मॉर्डना ने वैक्सीन बनाने के लिए एमआरएनए तकनीक का इस्तेमाल किया है, जिससे वैक्सीन शीघ्र विकसित होती है। इस नई तकनीक से वैक्सीन बनाने के लिए परम्परागत प्रोटीन या कमजोर रोगाणु की जरूरत नहीं पड़ती। जेनेटिक एमआरएनए को प्रयोगशाला में बनाना आसान होता है और प्रोटीन के बजाय एमआरएनए वैक्सीन बनाने में कई माह के समय की बचत होती है।

एमआरएनए वैक्सीन बनाने के लिए केवल कोरोना वायरस की जेनेटिक संरचना की आवश्यकता होती है। प्रयोगशाला मे कोई जीवित वायरस बनाने या विकसित करने की जरूरत नहीं होती। यह तकनीक ठीक वैसी ही है जैसे कि हर बार एक नया हार्डवेयर खोजने की बजाय सॉफ्टवेयर को ही अपग्रेड किया जाए। इसके बहुत से लाभ है, जैसे एक ही वैक्सीन में वायरस के विविध रूपों के लिए एक से अधिक एमआरएनए का इस्तेमाल किया जा सकता है।

ऑक्सफार्ड वैक्सीन में मारक अथवा प्रयोगशाला में बने वायरस वाहक का प्रयोग किया जाता है, जिसे एपिटोप में इंजेक्ट किया जाता है, जो रोग प्रतिरोधक तंत्र पर प्रहार करता है। इस प्रकार आज का दौर डिजाइनर और संपादित की जा सकने वाली वैक्सीन का है।

कम्प्यूटरीकृत, पशु और मानव मॉडल आधारित ड्रग कैंडिडेट की जांच में शानदार प्रगति देखी गई है। नई दवाओं और वैक्सीन की वर्चुअल स्क्रीनिंग और नए डिजाएन में कृत्रिम स्नायु तंत्र और सुपरवाइज्ड लर्निंग के तरीके गेमचेंजर साबित हो सकते हैं।

नई तकनीक से और जल्दी बन सकेगी वैक्सीन– किसी भी वायरस की संरचना में समय–समय पर परिवर्तन होता है। इन परिवर्तनों के चलते वैक्सीन के कम असरदार होने की आशंका रहती है। वायरस के दो नए स्ट्रेन के लिए वैक्सीन को उनके अनुरूप विकसित करने की जरूरत पड़ सकती है। एमआरएनए तकनीक से बनी वैक्सीन को नए स्ट्रेन के अनुरूप विकसित करना और बनाया आसान होता है।

नई तकनीकों के सहारे भविष्य मे हम किसी भी अनपेक्षित महामारी के लिए केवल 3 से 4 माह में वैक्सीन बना लें। हालांकि यह भी हो सकता है विश्व को फार्मा कंपनिया और वैज्ञानिक संस्थाएं टीबी, मलेरिया, एड्स आदि विकासशील देशों के दूसरे महमारी जैसे रोगों के निदान के लिए दवा या वैक्सीन डवलपमेंट में अधिक रूचि न लें और तकनीक प्रगति के बावजूद इन बीमारियों के चलते लोगों को अपनी जान गंवाते रहना पड़े।

सफल टीकाकरण के लिए जाना जाता है भारत– भारत जैसे विकासशील देश में बड़ी जनसंख्या के टीकाकरण कार्यक्रम को लेकर सवाल उठाए जा रहे थे। भारत पहले से ही विश्व में सर्वाधिक वैक्सीन बनाता या उनकी आपूर्ति करता रहा है। साथ ही महिलाओं और शिशुओं के लिए विश्व का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान चला चुका है। भारत का सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम (यूआइपी) प्रतिवर्ष 2.7 करोड़ गर्भवती महिलाओं के लिए बनाया गया है।

इसके तहत प्रतिवर्ष वैक्सीन के 40 करोड़ डोज का उपयोग हो रहा है। यूआइपी के लिए 27 हजार कोल्ड–चेन पाइंट है। उनमें से 95 प्रतिशत प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रो में स्थित है। हालांकि कुछ सवाल शेष है। एक बड़ा सवाल यह कि वायरस के प्रति रोग प्रतिरोधकता कितने समय तक रह सकेगी? अगर जीवन भर वैक्सीन का असर रहे तो यह सर्वोत्तम होगा।

सर्दी–जुकाम के कारण कोरोना वायरस के खिलाफ वैक्सीन आम तौर पर एक–दो साल तक असरदार रहती है। इसलिए संभव है कि लोगों को कोविड–19 वैक्सीन की मौसमी खुराक लेनी पड़ी। दूसरा सवाल कोरोना वायरस के विभिन्न स्ट्रेन पर वैक्सीन के असरकारी होने को लेकर है। सभी वायरस एक निश्चित अवधि के बाद रूपांतरित होते हैं।

विविध तकनीकों में त्वरित प्रगति भविष्य में दवा और वैक्सीन के तेजी से विकास की राह प्रशस्त करेगी। वैक्सीन बनाने की प्रक्रिया कोशिकीय कल्चर और फर्मेंटेशन के दौर से आगे बढ़ कर कम्प्यूटरीकृत मॉडल, डेटा एनालिटिक्स और एआइ के इस्तेमाल तक का सफर तय कर चुकी है।

अंतहीन संभावनाएं - दिव्यांगता राहत के विभिन्न आयाम

चिकित्सा
- निदान (एक्स रे, ओपीडी, लैब)
- उपचार (कृत्रिम अंग और कैलीपर्स)
- पोस्ट ऑपरेटिव केयर (वार्ड, आईसीयू)
- चिकित्सा सहायता (फार्मेसी एवं फिजियोथेरेपी)

स्वावलम्बन
- हस्तकला या शिल्पकला
- सिलाई प्रशिक्षण
- डिजिटल (कंप्यूटर) प्रशिक्षण
- मोबाइल फोन मरम्मत प्रशिक्षण
- नारायण चिल्ड्रन एकेडमी (निःशुल्क डिजीटल स्कूल)

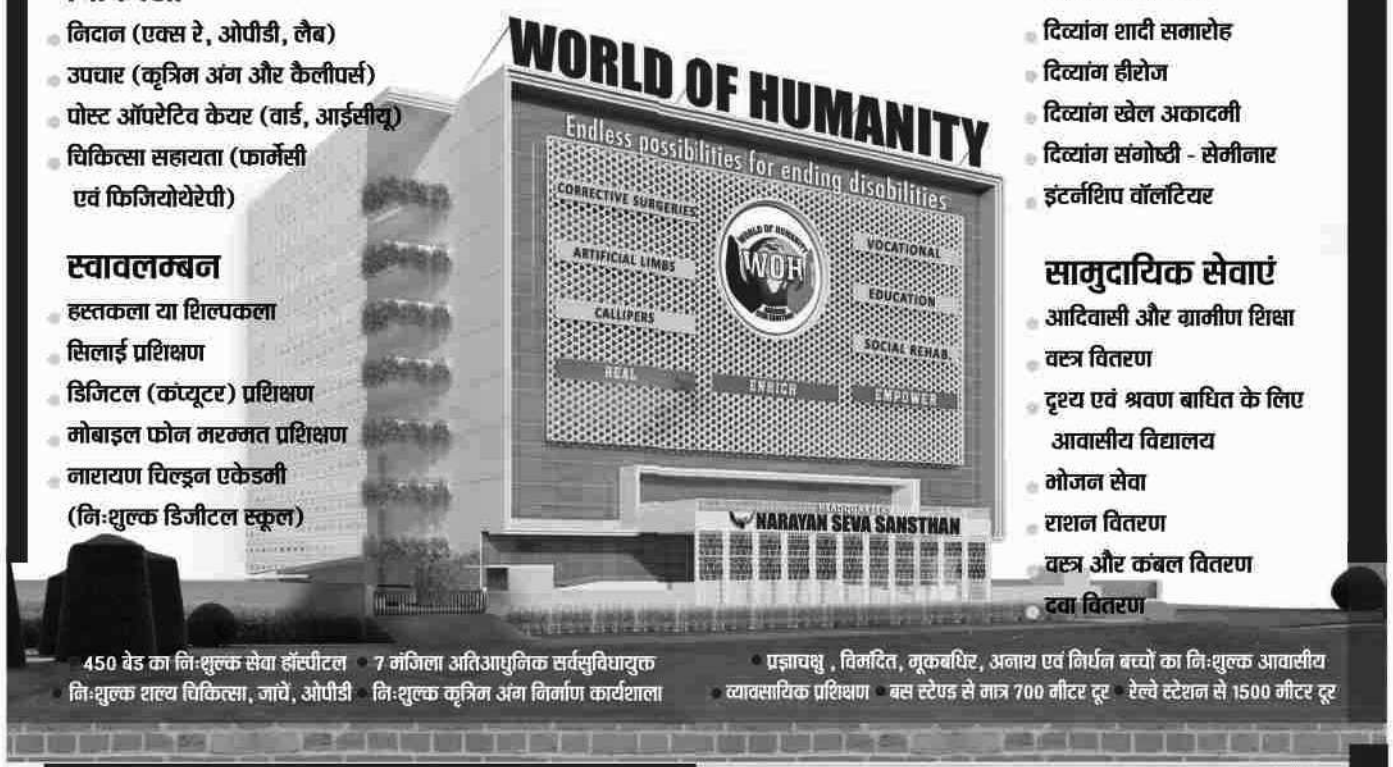

सशक्तिकरण
- दिव्यांग शादी समारोह
- दिव्यांग हीरोज
- दिव्यांग खेल अकादमी
- दिव्यांग संगोष्ठी - सेमीनार
- इंटर्नशिप वॉलंटियर

सामुदायिक सेवाएं
- आदिवासी और ग्रामीण शिक्षा
- वस्त्र वितरण
- दृश्य एवं श्रवण बाधित के लिए आवासीय विद्यालय
- भोजन सेवा
- राशन वितरण
- वस्त्र और कंबल वितरण
- दवा वितरण

- 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल • 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त
- निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी • निःशुल्क कृत्रिम अंग निर्माण कार्यशाला
- प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों का निःशुल्क आवासीय व्यावसायिक प्रशिक्षण • बस स्टेण्ड से मात्र 700 मीटर दूर • रेल्वे स्टेशन से 1500 मीटर दूर

मानवीय सेवा हेतु करें सहयोग
दानदाताओं के सम्मान में

डायमण्ड ईंट
सौजन्य दाता — ₹51,00,000
- टीवी चैनलों पर 3 मिनट की प्रोफाइल प्रसारित की जायेगी।
- नारायण सेवा की मासिक पत्रिका में एक पृष्ठ रंगीन प्रकाशित होगा। पत्रिका (10 लाख प्रति)।
- सेवा समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में स्वागत।
- 3 कृत्रिम अंग एवं चिकित्सा शिविर का सौजन्य लाभ मिलेगा।
- 4000 पेशेन्ट तक भोजन पहुंचाने का पुण्य मिलेगा।
- जन्मदिन और सालगिरह का उत्सव दिव्यांगों के साथ मनाएं।
- प्रतिदिन दाता और उसके परिवार के लिए 4000 रोगीजन करेंगे कुशल क्षेम की प्रार्थना।

वक्ष प्रतिमा
अस्पताल में प्रवेश पर

प्लेटिनम ईंट
सौजन्य दाता — ₹21,00,000
- टीवी चैनलों पर 2 मिनट की प्रोफाइल प्रसारित की जायेगी।
- नारायण सेवा की मासिक पत्रिका में आधा पृष्ठ रंगीन प्रकाशित होगा। पत्रिका (10 लाख प्रति)।
- सेवा समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में स्वागत।
- आपश्री को 2 कृत्रिम अंग एवं चिकित्सा शिविरों में सम्मानित किया जायेगा।
- 15 दिनों में 4000 रोगी तक भोजन पहुंचाने का पुण्य मिलेगा।
- जन्मदिन और सालगिरह का उत्सव दिव्यांगों के साथ मनाएं।
- प्रतिदिन दाता और उसके परिवार के लिए 4000 रोगीजन करेंगे कुशल क्षेम की प्रार्थना।

थ्रीडी फ्रेम
अस्पताल में प्रवेश पर

मानवीय सेवा हेतु करें सहयोग

स्वर्ण ईंट
सौजन्य दाता — ₹11,00,000
- टीवी चैनलों पर 1 मिनट की प्रोफाइल प्रसारित की जायेगी।
- नारायण सेवा की मासिक पत्रिका में क्वाटर पेज रंगीन प्रकाशित होगा। पत्रिका (10 लाख प्रति)।
- सेवा समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में स्वागत।
- आपश्री को शिविरों में सम्मानित किया जायेगा।
- 7 दिन तक रोगी एवं परिचारकों को भोजन खिलाने का पुण्य मिलेगा।
- जन्मदिन और सालगिरह का उत्सव दिव्यांगों के साथ मनाएं।
- प्रतिदिन दाता और उसके परिवार के लिए 4000 रोगीजन करेंगे कुशल क्षेम की प्रार्थना।

फोटो फ्रेम
अस्पताल में प्रवेश पर

रजत ईंट
सौजन्य दाता — ₹5,00,000
- सेवा कार्यक्रमों में विशिष्ट अतिथि के रूप में स्वागत।
- दानदाता को रोगियों का 3 दिन भोजन खिलाने का पुण्य मिलेगा।
- जन्मदिन और सालगिरह का उत्सव दिव्यांगों के साथ मनाएं।
- आपश्री और आपके परिवार के लिए हर दिन होगी प्रार्थना।

पट्टिका पर नाम
अस्पताल में चिल्ड्रन वार्ड

मानवीय सेवा हेतु करें सहयोग
दानदाताओं के सम्मान में

ताम्र ईंट
सौजन्य दाता — ₹2,00,000
- सेवा समारोह में 'अतिथि' के रूप
- दानदाता को 1 दिन का भोजन खिलाने का पुण्य दिया जाएगा।
- 5 साल तक जन्मदिन और सालगिरह का उत्सव मनाएं संस्थान में।
- 4000 रोगियों और परिचारकों द्वारा डोनर और उनके परिवार के लिए हर दिन होगी प्रार्थना।

पट्टिका पर नाम होगा
रोगी बेड पर

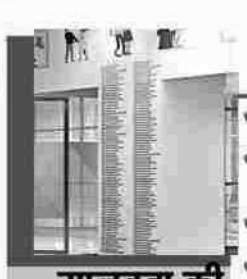

सेवा ईंट
सौजन्य दाता — ₹51,000
- सेवा समारोह में 'अतिथि' के रूप में सम्मान।
- दानदाता को 200 गरीबों और परिचारकों को भोजन 1 समय खिलाने का पुण्य मिलेगा।
- 1 वर्ष जन्मदिन और सालगिरह का उत्सव मनाएं संस्थान में।
- 4000 रोगियों और परिचारकों द्वारा दानदाता और उनके परिवार के लिए हर दिन होगी प्रार्थना।

मानवता की दीवार पर
नाम इमारत में

पुण्य ईंट
सौजन्य दाता — ₹1,00,000
- सेवा समारोह में 'अतिथि' के रूप में सम्मान।
- दानदाता को 1 दिन का भोजन खिलाने का पुण्य मिलेगा 500 रोगियों और परिचारकों के लिए।
- 2 साल के लिए जन्मदिन और शादी की सालगिरह का उत्सव मनाएं संस्थान में।
- 4000 रोगियों और परिचारकों द्वारा दानदाता और उनके परिवार के लिए हर दिन होगी प्रार्थना।

मानवता की दीवार पर
प्रवेश लॉबी

मानवता ईंट
सौजन्य दाता — ₹21,000
- सेवा समारोह में 'अतिथि' के रूप में सम्मान।
- दानदाता को 50 रोगियों और परिचारकों को 1 दिन का भोजन खिलाने का पुण्य मिलेगा।
- 4000 रोगियों और परिचारकों द्वारा डोनर और उनके परिवार के लिए कुशलक्षेम की प्रार्थना करवाई जायेगी।

करूणा भाव से स्वागत करें।

समृद्धि को मिला नया जीवन

राजस्थान में वर्ष पर्यन्त चमकते सूर्य वाले मौसम के कारण सूर्य नगरी के नाम से सुप्रसिद्ध जोधपुर शहर के प्रतापनगर निवासी ऑटो ड्राईवर विक्रम संचोरा की महज एक वर्ष की मासुम लाड़ली समृद्धि जन्म के कुछ माह तक स्वस्थ्य रही, लेकिन बाद में बच्चीं को ल्युकोसाईट एडिक्सन डिफक्ट रूपी गंभीर बीमारी ने जकड़ लिया। इलाज के इंतजार में जोधपुर की इस मासुम की जान खतरे में है। बच्ची को जन्म लेने के कुछ माह बाद ही नियमित रूप से बुखार और श्वास लेने में दिक्कत रहने लगी। दवा भी दी गई किन्तु स्थिति में सुधार नही हुआ और धीरे–धीरे स्वास्थ में गिरावट होती रही। चिकित्सकों के अनुसार बोनमेरो ट्रांसप्लांट से ही बच्ची की जान बचाई जा सकती है, जिसका खर्च 22 लाख रुपये बताया। जो इस सामान्य परिवार के लिए जुटाना अकल्पनीय और पहाड़ के समान था। लेकिन आर्थिक तंगी के कारण बच्ची के परिवारजन इलाज के खर्च की राशि का इंतजाम नही कर पा रहे थे। इसी बीच समृद्धि के पिता विक्रम संचोरा को नारायण सेवा संस्थान का पता चला और वे पिछले दिनों संस्थान में आकर बेटी की गंभीर बीमारी और अपनी आर्थिक विवशता को संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल को बताते हुए इलाज में मदद का आग्रह किया। अग्रवाल ने बताया कि बच्ची की सांसो की डोर को बचाने के लिए अविलम्ब बोनमेरो ट्रांसप्लांट के लिए संस्थान के दानदाताओं के माध्यम से सहायता राशि उपलब्ध कराई गई।

जरुरतमंदों की सेवा

एक हकीम गुरु गोविन्द सिंह के दर्शन करने आनन्दपुर गया। जब वह उनसे मिलकर वापस लौटने लगा तो गुरुजी ने आशीष देते हुए कहा– जाओ तुम दीन दुखियों की सेवा करो।

हकीम अपने घर लौट आया। हकीम इबादत में तल्लीन था कि गुरु गोविन्द सिंह उसके घर आ पहुँचे। वह उनकी खातिर में तैयार होता, इससे पहले घर के बाहर किसी ने आवाज लगाई –हकीम साहब ! मेरे पड़ोसी की तबीयत बहुत खराब है। उसे बचा लीजिए। यह सुनकर हकीम थोड़ा असमंजस में पड़ा कि बीमार की सेवा की जाए या गुरु का सत्कार। उसने बीमार का इलाज करना उचित समझा। इलाज के पश्चात् हकीम जब घर आया तो गुरुजी घर पर बैठे मिले। वह गुरु जी से क्षमा मांगने लगा। गुरु जी ने गले लगाकर कहा मैं तुम्हारे सेवाभाव से बहुत खुश हुआ।

सम्पादकीय

मनुष्य उन वस्तुओं और व्यक्तियों के पीछे अहर्निश पागलों की तरह भाग रहा है, जो स्थायी रूप से उसके पास रहने वाली नहीं है। दुःख इस बात का है कि इसे समझते–बूझते भी वह इससे आँख मूंदे हुए है। सब जानते हैं कि एक न एक दिन मरना है, किन्तु उस मरण को सुधारने का प्रयत्न नहीं करते। मनुष्य अच्छी–बुरी हर परिस्थिति में सत्य पथ पर अविचलित चलता रहे तो उसे जीवन में अपने–पराए का बोध और दुख कभी अनुभव भी नहीं होगा। इच्छाओं के पूर्ण न होने पर ही मनुष्य दुखपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

जीवन के हर मोड़ पर लिये जाने वाले छोटे या बड़े निर्णयों का आधार हमारे उद्देश्य पर निर्भर है, जहाँ उद्देश्य नहीं वहाँ जीवन नहीं। यही बात हमारे ऋषि–मुनि, सन्त और शास्त्र भी करते रहे हैं। अब सवाल यह पैदा होता है कि आखिर उद्देश्य क्या हो और उसे निर्धारित कैसे करें? इसका हमारे पुरखों ने बहुत सीधा–सादा उत्तर भी तलाशकर हमें दिया है और वह है– केवल यह जान लें कि "मैं कौन," इस विषय में यदि हम जागरूक हो गए तो उद्देश्य तो मिला ही, जीवन की कई समस्याओं का हल भी मिल जाता है। "मैं" से ऊपर उठकर हम सत्य को, वास्तविकता को स्वीकार करने लगेंगे तो सन्देह के सारे बादल छंट जाएंगे। हम अपने भीतर स्पष्टता और शुद्धता महसूस करने लगेंगे। यही समझ, शक्तिरूप, मार्गदर्शक बनकर हमें मानवता के लिए करुणा, दया, संवेदना और समभाव के साथ जीवन जीने के लिए सक्षम बनाएगी। तब प्राणि मात्र से स्नेह–प्यार हमारे लिए स्वाभाविक और अपरिहार्य हो जाएगा। जीवन में आनन्द की हिलोर उठेगी, समस्याओं के बन्धन टूट जाएंगे। जीवन उन्मुक्त हो उठेगा।

कुछ काव्यमय

जब तक भू पर एक भी,
बाकी रहे अनाथ।
तब तक कैसे बैठ लें,
धरे हाथ पर हाथ।।
जिनके मन में उपजते,
सेवा के सद्भाव।
नाविक बन खेते प्रभु,
उनकी जीवन नाव।।
दीन दुःखी की पीर हर,
देना होगा त्राण।
तभी मुखर कुरआन हो,
वाणी पिटक पुराण।।
कदम–कदम पर हे प्रभो,
उठते ये उद्गार।
आंसू ना देखूं कहीं,
नहीं सुनूं चीत्कार।।
सेवा–रथ के सारथी,
बनना होगा आज।
गीता–ज्ञान मिले तभी,
समरस बने समाज।।

– वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

खुश हुई रूकी जिंदगी.....

संस्थान की ओर से विभिन्न शहरों में उन दिव्यांगजन की सहायता के लिए शिविर लगाए गए जो सड़क –रेल व अन्य दुर्घटनाओं में अपने हाथ–पैर गवां बैठे। वे चल नहीं पा रहे, काम नहीं कर पा रहे।

ऐसी रूकी जिंदगियों को सक्रिय करने के लिए निःशुल्क कृत्रिम अंग माप एवं वितरण शिविर लगाये गये। शिविर में जब उन्हें उम्मीद की किरण नजर आई तो वे खुश हो उठे।

हमीरपुर (हि.प्र.)

जामली धाम में संस्थान की हमीरपुर शाखाके तत्वावधान में 28 फरवरी को आयोजित शिविर में 17 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग व केलीपर लगाए गए डॉ. नेहा ने 12 दिव्यांगों का कृत्रिम अंग व कैलीपर बनाने के लिए चयन किया। मुख्य अतिथि पालिका चेयरमेन श्रीमती बबली देवी थी। अध्यक्षता ब्लॉक परिषद की श्रीमती रीनादेवी ने की। विशिष्ट अतिथि प्रधान संयोजक श्रीमती निर्मला डोगरा थी। संस्थान शाखा संयोजक श्री रसील सिह मनकोटिया ने अतिथियों का स्वागत व संयोजन श्री अखिलेश जी अग्निहोत्री ने किया।

खुर्जा (उत्तरप्रदेश)

श्री गोकुल विहार शनि मन्दिर के निकट आयोजित शिविर में 47 दिव्यांगों को जांच कर 31 का कृत्रिम अंग लगाने के लिए माप लिया गया।शेष की आवश्यक सहायता की गई।

स्व. श्री उदयवीरसिंह जी राघव की 27 वी. पुण्यतिथि पर 15 फरवरी को सम्पन्न शिविर की मुख्य अतिथि समाज सेविका श्रीमति सुशीला देवी जी थी। अध्यक्षता श्री राजप्रताप राघव ने की।

विशिष्ट अतिथि के रूप में सर्वश्री योगेन्द्र प्रताप जी राघव, महेन्द्र प्रताप राघव व नरेन्द्र प्रताप राघव मंचासीन थे। शिविर प्रभारी श्री अखिलेश जी अग्निहोत्री ने अतिथियों व उपस्थिति दिव्यांगजन का स्वागत किया।

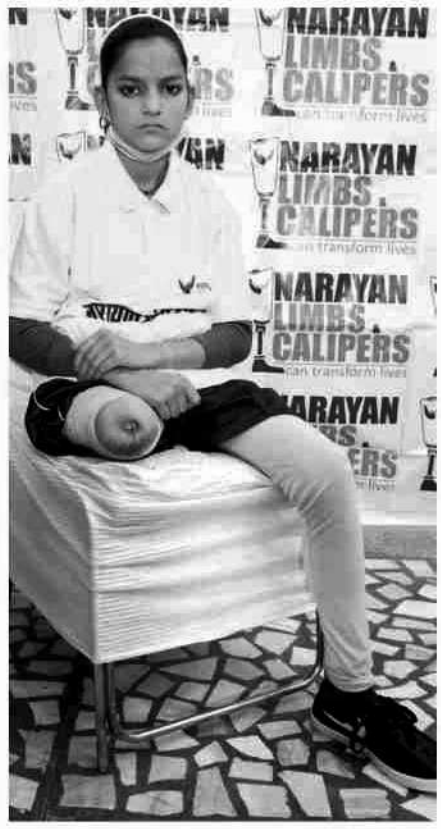

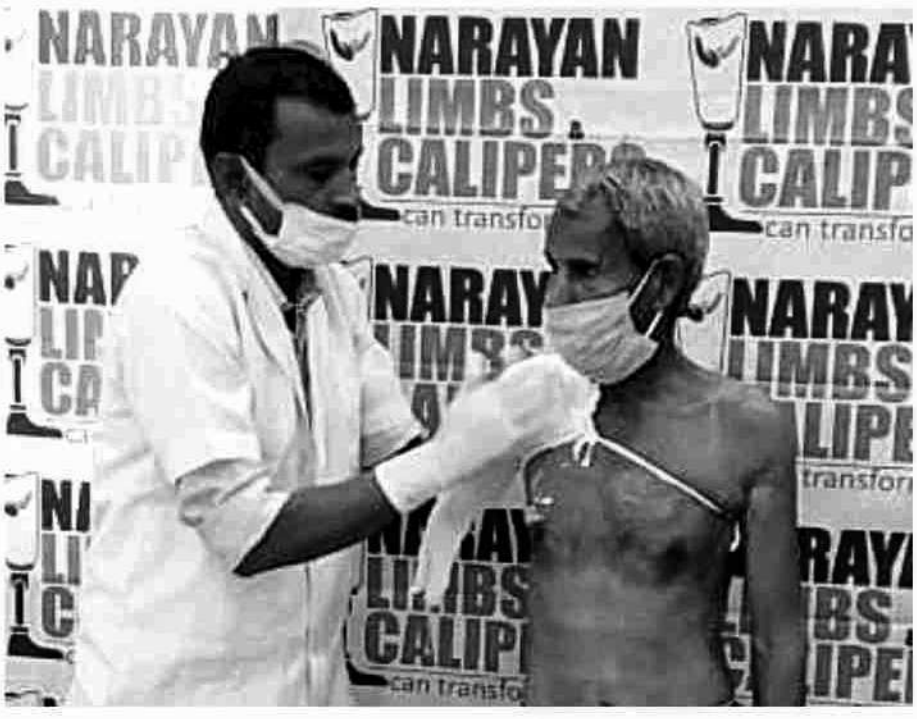

पुणे (महाराष्ट्र)

पुणे में कृत्रिम अंग माप शिविर सम्पन्न हुआ । शिविर सहयोगकर्ता गोड़वाड़ शिरवी क्षत्रिय समाज पुणे द्वारा आयोजित शिविर में 20 दिव्यांगों भाई–बहनों के कृत्रिम हाथ–पैर माप लिया गया, 2 कैलिपर वितरण किया गया। शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् हीरालाल जी राठौड, अध्यक्षता श्रीमान हकाराम जी राठौड़, विशिष्ट अतिथि श्रीमान् रताराम जी, श्रीमान अर्जुन जी, श्रीमान सोमाराम जी आदि कई मेहमानगण उपस्थित थे। शिविर में दिव्यांगों के साथ आए परिजनों के चेहरे पर एक अलग खुशी देखने को मिली। शिविर प्रभारी सुरेन्द्र जी सिंह, लोगर जी डांगी, श्रीअनिल जी पालीवाल ने अपनी सेवाएं दीं।

पाली (राजस्थान)

संस्थान की पाली शाखा द्वारा निःशुल्क कृत्रिम अंग नाप शिविर का आयोजन हुआ। शिविर सहयोगकर्ता महावीर इन्टरनेशनल विंग महिला, पाली रहे। मुख्य अंतिथि श्रीमान श्रवण जी कोठारी अध्यक्ष महावीर इंटरनेशनल–पाली, श्रीमती विमला जी संरक्षक, विशिष्ट अतिथि श्रीमती ललीता जी कोठारी, श्रीमान् तेजपाल जी जैन, श्रीमती प्रियंका जी मूथा, श्रीमान् मोतीलाल जी बोहरा समाजसेवी, श्रीमान कांतीलाल जी मूथा शाखा संयोजक उपस्थित थे।

शिविर में दिव्यांग भाई–बहनों जिन्होंने विभिन्न दुर्घटनाओं में अपने हाथ या पैर गंवा दिए थे और जो जन्मजात पोलियोग्रस्त थे ऐसे 65 रोगियों के पंजीयन हुये। 07 ऑपरेशन हेतु चयन 10 कैलिपर्स, 11 कृत्रिम अंग बनाने के लिए नाप लिए गये।

अतिथिगणों ने जरुरतमंद दिव्यांगजनों को आशीर्वाद प्रदान किया, शिविर टीम में श्री भंवरसिंह जी, श्री हरिप्रसाद जी, श्री मुकेश त्रिपाठी, श्री अनिल जी पालीवाल ने अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान के निःशुल्क सेवा प्रकल्पों की जानकारी दी।

एक सांस में नहीं घूंट-घूंट पिएं पानी

कई बार लोग एक सांस में पूरा एक गिलास पानी पी जाते हैं। पानी पीने का ये तरीका गलत और नुकसानदेह है। पानी हमेशा कम मात्रा और छोटे–छोटे घूंट में थोड़े– थोड़े अंतराल से पूरा पीते रहना बेहतर है। इससे पानी में मौजूद पोषक तत्व अच्छी तरह से अवशोषित हो पाएंगे।

इससे गैस की समस्या भी नहीं होगी। इसके अलावा कुछ लोग आसमान की ओर मुंह करके दूर से और एक सांस में पानी पीते हैं, जिससे पानी तेजी से पेट में जाता है और पाचन तंत्र को नुकसान पहुंचाता है।

इससे पानी के साथ कुछ मात्रा में हवा भी पेट में जाती है, जिससे पाचन कमजोर होने के साथ पेट फूलने की समस्या भी हो सकती है। पानी बोतल से पीने के बजाय गिलास में लेकर पिएं। अगर बोतल से पीना भी है, मुंह लगाकर ही पिएं।

परवल–भूख बढ़ाती और कोलेस्ट्रोल लेवल घटता

परवल में विटामिन –ए, विटामिन – बी, विटामिन सी, कैल्शियम अधिक और कैलोरी कम होती है। इससे कोलेस्ट्राल कम का स्तर नियंत्रित रहता है। त्वचा के रोग, बुखार कब्ज में फायदेमंद है। त्वचा की झुरियां कम करता, युरिन के रोग व मधुमेह से भी बचता है। भूख न लगने पर इसको खाना फायदेमंद है। पीलिया में भी खा सकते हैं। इसकी सब्जी, भरता और कुछ जगहों पर मिठाई भी बनती है।

दिव्यांगों के द्वार संस्थान परिवार...

सायरा : एडीप योजना के अंतर्गत नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर एवं सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में मंगलवार को पंचायत समिति सायरा में निःशुल्क दिव्यांगता जाँच, चयन एवं उपकरण वितरण शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में मुख्य अतिथि पूर्व मंत्री मांगीलाल जी गरासिया, प्रधान सवाराम जी गमेती, उप– प्रधान भारत सिंह जी, विकास अधिकारी भँवर सिंह जी चारण और पूर्व उपप्रधान अभिमन्यु सिंह जी झाला ने अपने हाथों से दिव्यांगों को सहायक उपकरण भेंट किये।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि डॉ नेहा जी अग्निहोत्री ने 46 रोगियों की जांच करते 10 दिव्यांगों ऑपरेशन के लिये चयनित किया। आदिवासी 5 निःशक्त बंधुओं को ट्राईसाइकिल, 10 को व्हीलचेयर, 10 को वैशाखियों दी गई तथा 5 का कैलिपर्स का नाप लिया गया। शिविर प्रभारी दल्लाराम जी पटेल, हरिप्रसाद जी लड्ढा, लोगर जी डांगी, मोहन जी मीणा ने भी अपनी सेवाएं दी।

मावली : भारत सरकार की एडीप योजना के अंतर्गत नारायण सेवा संस्थान का सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के सहयोग से पंचायत समिति मावली में सोमवार को दिव्यांगता जाँच, चयन एवं उपकरण वितरण शिविर आयोजित हुआ। जिसका उद्घाटन प्रधान पुष्कर लाल जी डांगी ने दीप प्रज्वलन कर किया। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि शिविर में आए 76 रोगियों की जांच व चिकित्सा डॉ मानस रंजन जी साहू ने की। उपस्थित अतिथि उपप्रधान नरेंद्र कुमार जी जैन, ब्लॉक अध्यक्ष अशोक जी वैष्णव, समाज कल्याण विभाग के शुभम जी जैमिनी और सहायक विकास अधिकारी हरिसिंह जी राव ने 5 दिव्यांगजन को ट्राईसाइकिल, 10 को व्हीलचेयर, 10 को वैशाखी और 2 को ब्लाइंड स्टिक भेंट किए। 5 दिव्यांगों का शल्य चिकित्सा के लिए चयन किया। शिविर प्रभारी हरिप्रसाद जी लड्ढा, लोगर जी डांगी, मोहन जी मीणा, नरेंद्र जी झाला, फतेह जी सिंह ने भी सेवाएं दी।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023